RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-06
June-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

छत्तीसगढ़ राज्य: जनजातीय पर्यटन की एक संभावना

[1]डॉ तपेश चन्द्र गुप्ता; [2]डॉ रितु मारवाह

[1]प्राध्यापक, शास. जे. यो. छत्तीसगढ़ महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
[2]सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य), शासकीय दू.ब. महिला महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
[Corresponding Author: Email: tapesh_48gupta@yahoo.in]

छत्तीसगढ़ राज्य का परिचय-:

छत्तीसगढ़ राज्य का गठन 01 नवंबर 2000 को मध्य प्रदेश राज्य के दक्षिण पूर्वी-10 जिलों को पृथक कर बनाया गया . जो कि छत्तीसगढ़ी और 06 गोंडी भाषियों के आधार पर विभाजित कर नया राज्य बनाया गया था। राज्य बनने के लगभग छ वर्ष पश्चात छत्तीसगढ़ी को संवैधानिक रूप से राज :्य की काम काज की भाषा घोषित की गईराज्य का नामकरण के सन्दर्भ. में मानाजाता है किछत्तीसगढ़ नाम की उत्पत्ति प्राचीन काल में दक्षिण कौशल के (दक्षिण कोसल) राजा छेदिस के गढ़ (राजपाठ/किला)रूप में जाना जाता था। को बाद में "छत्तीसगढ़" मराठा साम्राज्य के समय में लोकप्रिय बनाया गया था और पहली बार 1795 में एक आधिकारिक दस्तावेज़ में इस्तेमाल किया गया था। यह दावा किया जाता है कि छत्तीसगढ़ इस क्षेत्र के 36 प्राचीन किलों से अपना नाम लेता है। ग + छत्तीस)ढ = **छत्तीस किले वाला राज्य "छत्तीसगढ़"**। पुराने राज्य में 36 प्रजातंत्र रतनपुर :थे (सामंती क्षेत्र), विजयपुर, खौड़, मारो, कौतगढ़, नवागढ़, सोंधी, औखर, पदारभट्ट, सेमरीया, चंपा। लफा , छुरी, केंदा, माटिन, अपरोरा, पेंड्रा, कुरुतीकंडरी-, रायपुर, पाटन, सिमगा, सिंगारपुर, लवाण, ओमेरा, दुर्ग, सारदा, सिरसा, मेंहदी, खल्लारी, सिरपुर, फतेश्वर, राजिम, सिंघानगढ़, सुवर्मन, टेंगरनगर अकलतरा। हालांकि, विशेषज्ञ इस स्पष्टीकरण से सहमत नहीं हैं , क्योंकि 36 किलों को इस क्षेत्र में पुरातात्विक रूप से पहचाना नहीं जा सकता है । जिसे कि महानदी के उत्तर भाग में और 18 बताया जाता 18 दक्षिण भाग में है.

View of waterfalls: Ghatarani, Swetdharaa, Chitrakot and Amritdhara: from Chhattisgarh Tourism Department, Raipur A Report-2014.

छत्तीसगढ़ की शहरी आबादी 23.4% है)2011 में लगभग 5.1 मिलियन लोग (शहरी क्षेत्रों में रहते हैं। भारत सरकार की एक रिपोर्ट के अनुसार , कम से कम 34% आदिवासी हैं, 12% अनुसूचित जाति हैं और 50% से अधिक अन्य वर्गों की आधिकारिक सूची से संबंधित हैं वैसे लिंग अनुपात की दृष्टि से . आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में महिलाओं का अनुपात अधिकहै राज्य . 44 के कुल भूभाग का% भाग वन भूमि है . जबकि मध्य भाग

RRIJM 2015, All Rights Reserved

उपजाऊ मैदान है। राज्य का पशु वन भैंसा , या जंगली एशियाई भैंस है तथा राजकीय पक्षी परनामी , या पहाड़ी मैना है। राज्य वृक्ष बस्तर संभाग में पाया जाने वाला साल है। (सराय)

View of Sarguja Museum: from Chhattisgarh Culture Department, Raipur A Report-2012

छत्तीसगढ़ राज्य में ज्यादातर सड़कें चार से छ :लेन की है, जो देश के प्रमुख शहरों से जोड़ती है, राज्य से गुजरने वाले ग्यारह राष्ट्रीय राजमार्ग जिसकी कुल लंबाई में 3055 किमी हैं। राज्य में फैला रेलवे नेटवर्क भारतीय रेलवे के दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे जोन के अधिकार क्षेत्र में आता है , जिसका क्षेत्रीय क्षेत्रीय मुख्यालय न्यायधानी बिलासपुर है। मुख्य रेलवे जंक्शन बिलासपुर रायपुर दुर्ग डोंगरगढ़ , जंक्शन ,, हैं, जो रेल मार्ग के साथ साथ-भारत के प्रमुख शहरों को सड़क मार्ग से भी जुड़े हुए हैं। अन्य राज्यों की तुलना में छत्तीसगढ़ में एयर इन्फ्रास्ट्रक्चर छोटा है। स्वामी विवेकानंद एयरपोर्ट ,रायपुर अनुसूचित वाणिज्यिक हवाई सेवाओं के लिए राज्य का एकमात्र हवाई अड्डा है। छत्तीसगढ़ में 2003 में एविएशन टर्बाइन फ्यूल पर (एटीएफ) बिक्री कर में भारी कमी से यात्री प्रवाह में तेज वृद्धिहुई है। 2011 और नवंबर 2019 के बीच यात्री प्रवाह में 70% की वृद्धि हुई है।

छत्तीसगढ़ राज्य का जनजाति क्षेत्र पर्यटन -:

छत्तीसगढ़ राज्य की नैसर्गिक ऐतिहासिक जनजाति क्षेत्र पर्यटन की दृष्टि से बड़ी उपयुक्त और महत्वपूर्ण है। राज्य के वन जानवरों की उल्लेखनीय प्रजातियों हैं जो सदियों से वन समुदायों के साथ मिलते हैं। यहाँ का "अचानाकमार्ग अभ्यारण"सफ़ेद भालू के नाम से प्रसिद्द है .जंगल के परिदृश्य में यहाँ बड़ी संख्या में झरने और गुफाएं (कुटुम्बसर)हरियाली (कान्गरवेली,मैनपाट), प्रकृति के जीवों की अद्भुत विविधता , विश्व जीवन-जानवरों के लिए अनुकूल हैं। राज्य के बस्तर के गहरे वन क्षेत्र में हजारों वर्षों से सबसे पुरानी और घनी आदिवासी बस्ती है, जो लगभग अछूती जनजाति संस्कृति हैआज भी कुतुहल का केंद्र "अबुझमाड" जिसमें , है। बस्तर का दशहरा महोत्सव काफी लोकप्रिय है जिसे देखने के लिए विदेशी पर्यटक भी आते है यह पर . दिनों का होता है 70 राज्य पारंपरिक संस्कृति और प्राकृतिक चिकित्सा से भरा है। "आमा चांटी"(लाल रंग की बड़ी चीटी जो मलेरिया जैसे रोग के (प्रचुर . लिए भी प्रयोग की जाती हैसंसाधन संपन्न राज्य वनोपज के साथ साथ देश के लिए बिजलीदोलामाईड ,हीरा ,अभ्रक , और इस्पात का एक स्रोत है, जिसमें कुल लोहा उत्पादन का 15% भाग में इस राज्य का योगदान है। भारत के मध्य में स्थित छत्तीसगढ़ एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और आकर्षक प्राकृतिक विविधता से संपन्न है। राज्य प्राचीन स्मारकों (...पाली,भोरमदेव ,सिरपुर) , दुर्लभ वन्यजीवों(.... घासीदास अभ्यारण ,अचानक मार्ग) , अति सुंदर नक्काशीदार मंदिरों , बौद्ध स्थलों (मेनपाट) , महलों कां,कवर्धा)केर(, झरनों(जतमई ,स्वेतधारा ,चित्रकोट) , गुफाओं (कुटुम्बसर), शैल चित्रों और पहाड़ी पठारों से भरा हुआ है। छत्तीसगढ़ के सकल राज्य घरेलू उत्पाद का (जीएसडीपी)2018-19 में 3.26 लाख करोड़ यूएस)$ 45 बिलियन(अनुमानित है , जबकि भारत में 17 वीं सबसे बड़ी राज्य अर्थव्यवस्था। 2017-18 में छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था में 6.7% की वृद्धि दर दर्ज की गई। उच्च विकास दर हासिल करने में छत्तीसगढ़ की सफलता के कारक कृषि और औद्योगिक उत्पादन हैं।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

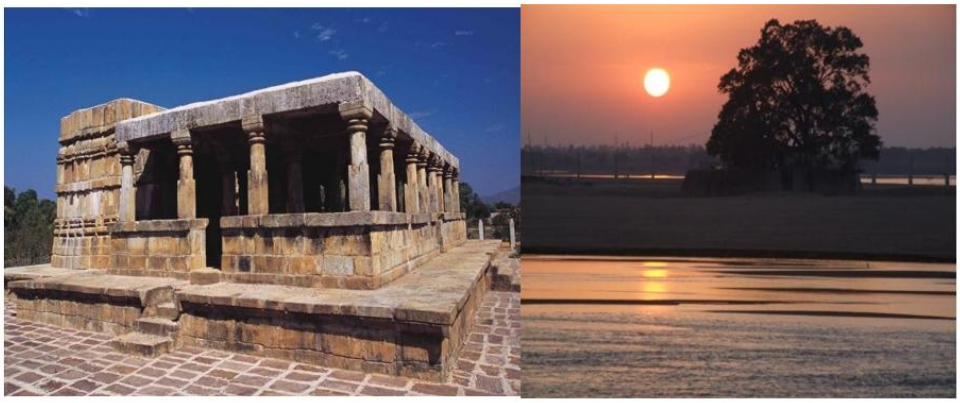

View of Sarguja Tribe District: from Chhattisgarh Tourism Department, Raipur A Report-2014 at Tribe are.

राज्य सरकार पर्यटन के प्रभावी विपणन और विकास के लिए जोर दे रही है जिसे प्रकृति और संस्कृति और मानव पूंजी को ध्यान में रखते हुए पर्यटन सेवाओं के आपूर्तिकर्ताओं के साथ अंतरराष्ट्रीय मानकों और बुनियादी ढाँचे के लिए बुनियादी ढांचे की निरंतर आवश्यकता होती है जो पर्यटन और पर्यटन स्थलों को बनाने के लिए महत्वपूर्ण कारक हैं समुदायों और पर्यावरण के परिवेश का सतत विकास करना है । भारत पर्यटक का स्वर्ग है और इसमें आधुनिकता और पारंपरिक " अतिथि देव भव"की अनूठी विशेषताएं हैं। प्रत्येक राज्य की अपनी सांस्कृतिक महिमा और ऐतिहासिक स्मारक हैं। पर्यटन को बढ़ावा देने में सांस्कृतिक विरासत का सीधा प्रभाव पड़ रहा है। पर्यटन को दुनिया का सबसे बड़ा उद्योग माना जाता है जिसमें लगभग 600 मिलियन लोग यात्रा और भ्रमण करते हैं। यह एकल सबसे बड़ी गतिविधि है जो देश के खजाने में सबसे बड़ी कमाई लाती है।

राज्य के वन साल, सागौन और बांस के पेड़ों की प्रकृति की छतरी और हरे भरे वनस्पतियों-से परिपूर्ण है। राज्य के 135,191 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में से 44 प्रतिशत से अधिक भाग जंगलों से सुसज्जित है यहाँ के वनों में, बाघ , गौर, नील समलैंगिक, जंगली भैंस , चीतल, जंगली सूअर और तेंदुए जैसे जानवरों की उल्लेखनीय प्रजातियों हैं जो सदियों से वन समुदायों से जुडी हैं। बस्तर के जंगल दुनिया के सबसे घने जंगल में से एक हैं और भारत में तीन संयुक्त राष्ट्र द्वारा पहचाने गए जैव विविधता वाले हॉट स्पॉट में से एक है। छत्तीसगढ़ भारत का बहुत तेजी से विकसित हो रहा राज्य है। अन्य उद्योगों की तरह , छत्तीसगढ़ में पर्यटन उद्योग भी तेजी से बढ़ता दिखता है। पर्यटन केंद्र चित्रकोट, अबूझमाड़ बस)्तरतक (सरगुजा) से मैनपाट (अर्थात उत्तर से दक्षिण तक फैले हुए हैं। इसी तरह, भोरमदेव से राजिम (कवर्धा) तक (रायपुर)धार्मिक केंद्र देव उपहार है। प्राचीन काल में भी राज्य पर्यटन की दृष्टि से दुनिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यहाँ चीनी यात्री आने का भी लेख है.

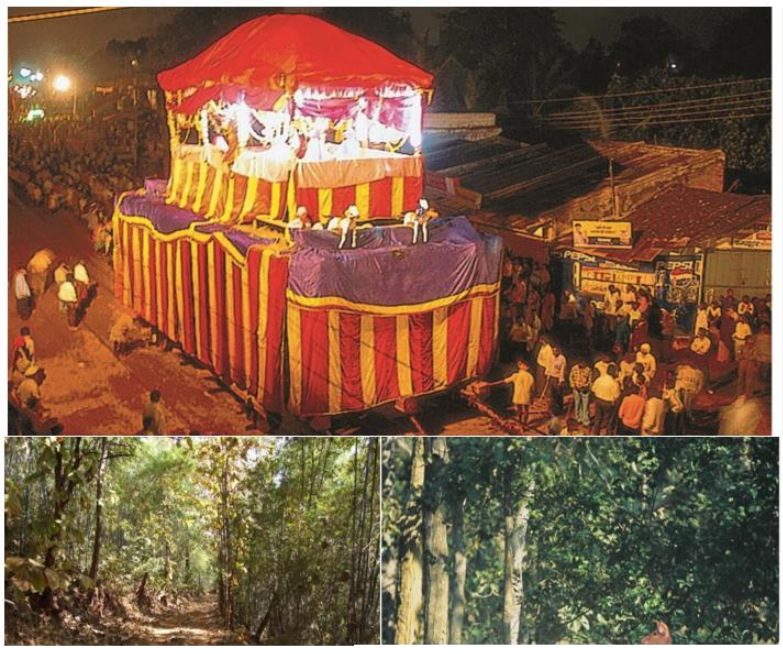

View of World famous Bastar Dussahra festival: from Chhattisgarh Tourism & Culture Department, Raipur Annual Report-2013.

RRIJM 2015, All Rights Reserved

पर्यटन प्रोत्साहन योजना व असफलता के कारण-:

यदपि राज्य सरकार के द्वारा पर्यटन प्रोत्साहन हेतु योजना बनाई गई है जिसके अंतर्गत होटल, मोटल, पानी स्लो / पार्क, आदि के भूमि आवंटन , क्रय के पंजीयन शुल्क में कटौती / वाणिज्यिक कर में छुट का प्रावधान किया गया है किन्तु पर्याप्त प्रचार प्रसार के अभाव में पर्यटन प्रोत्साहक उद्यमियोंं को आकर्षित नही किया जा सका ।

छत्तीसगढ़ राज्य पर्यटन विभाग द्वारा पर्याप्त आवास सुविधा और भोजन व्यवस्था सहित आवश्यक सुविधाओं का विस्तार किया गया है किन्तु शहर से दुरी और एकांत होने के कारण विश्वसनीयता को प्राप्त नही कर पाया है।

समस्या का निदान और सुझाव-:

छत्तीसगढ़ राज्य के मध्य भाग में मैकल , सिहावा और रामगिरि की प्राचीन पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यह प्राचीन काल से आधुनिक समय तक पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। यह दर्शन धर्म और संस्कृति का केंद्र बन गया है। यह प्राचीन और प्राचीन भूमि है और कहा जाता है कि भगवान राम ने वनवास का कुछ समय यहां बिताया था और इसे दक्षिणकाशी के नाम से जाना जाता था। इसमें एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और आकर्षक प्राकृतिक विविधता है और यह प्राचीन स्मारकों , दुर्लभ वन्य जीवन , मंदिरों, बौद्ध स्थलों , महलों, झरनों, पहाड़ियों, पठारों, गुफाओं और शैल चित्रों से भरा है। छत्तीसगढ़ की भूमि एक समृद्ध और विविध पुरातात्विक और सांस्कृतिक विरासत है। एक तरफ, घने, बचे हुए जंगल और तेजी से बहती नदियाँ और झरने। दूसरी ओर, ऐतिहासिक प्रासंगिकता के साथ कई साइटें हैं जिन्हें राष्ट्रीयता के अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक रिसॉर्ट में विकसित किया जा सकता है। हालांकि सभी स्थानों तक आवश्यक संपर्क व बुनियादी सुविधाएं विकसित नही हो पाई है जिसके विकसित करने की आवश्यकता है।

जैसे कि -:

- ✓ राजमार्ग पर पर्यटकों के लिए बुनियादी सुविधा ढांचे का विकास।
- ✓ पर्यटक सर्किट का एकीकृत मार्ग विकास।
- ✓ आदिवासी गांवों में पर्यटन के लिए सुविधा का विस्तार ।
- ✓ पहाड़ी क्षेत्रों में पर्यटकों के लिए आवास और भोजन व्यवस्था का विस्तार व विकास।
- ✓ सिरपुरडोंगरगढ़ में ,मेनपाट , बौद्ध केंद्र का विकास।
- ✓ राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन सूचना केंद्र और साहित्य की उपलब्धता

पर्यटन की वास्तविक क्षमता का उपभोग करने के लिए पर्यटन क्षेत्रों का एकीकृत दृष्टिकोण से विकास करना होगा। सभी पर्यटन स्थलों और राजमार्गों पर बुनियादी ढांचे के साथ साथ पर्यटन केन्द्रों की उत्साहवर्धक जानकारी उपलब्ध कराना होगा हैं। एकीकृत पर्यटक " राजिम-बारनवापारा - रायपुर -कवर्धा - "नगरनार -बस्तर-कोडागांव - गंगरेल बांध -सिरपुरकी ओर विशेष ध्यान देना होगा रायगढ़ सरगुजा क्षेत्र के ग्रामीण आदिवासी गांवों में भी पर्यटन विकास को बढ़ावा देना होगा ।

राज्य में आने वाले तीर्थयातत्रीयों के लिए स्वच्छ आवास और रोचक भोजन व्यवस्था को बढ़ावा देना होगा ताकि तीन शक्ती पीठ-दंतेवाडा में माँ दंतेश्वरी ,डोंगरगढ़ में माँ बम्लेश्वरी और रतनपुर में महामाया से पर्यटक जुड़े रहें और मंदिर का दर्शन कर यात्रा को स्मरणीय बनाए रखें । छत्तीसगढ़ पर्यटन सुव्यवस्थित और प्रशिक्षित पर्यटन बने यही अपेक्षित है ।

निष्कर्ष

छत्तीसगढ़ राज्य का आदिवासी पर्यटन अभ्यारण , सांस्कृतिक अध्ययन के लिए ,हर्बल चिकित्सा ,प्राकृतिक सौन्दर्य वैसे चुनौतीपूर्ण , रोचक व कौतुहल से परिपूर्ण है ,सर्वोत्तम साहसिक पर्यटन के लिए सुविधा आवश्यक नही है फिर भी सामाजिक और पारिवारिक पर्यटन के लिए सुविधापूर्ण होना अपेक्षित है.

आदिवासी पर्यटन केवल छत्तीसगढ़ राज्य के लिए नहीं है, बल्कि भारत सहित एशिया के अन्य देशों मलेशिया, थाईलैंड, सिंगापुर आदि भी विदेशियों के लिए आकर्षण के केंद्र बिंदु बन सकते हैं । किन्तु पर्यटकों को आकर्षित करने में जो समस्या है, वह सिर्फ कुछ स्थानीय गड़बड़ियों समस्यायों /के कारण है , जिसमें पर्याप्त प्रचार प्रसार न होना -शान्ति , गाईड का अभाव , आय के अनुरूप,सुरक्षा उच्च गुणवत्ता युक्त होटल मोटल का- न होना आदि है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. इंडिया टूरिस्ट रोड एटलस, इंडियन मैप सर्विस, 2006
2. छत्तीसगढ़ का परिचयडॉ। बलदेव प्रसाद मिश्र -
3. भारत का पर्यटन पारंपरिक दृष्टिकोण एक :दृष्टिकोण 2005
4. पर्यटन और विकास के सिद्धांत और अभ्यास :

5. शर्मा, विवेक, भारत में पर्यटन / अरिहंत प्रकाशन :Sharma, Vivek, Tourism in India: Arihant publications.
6. Tourism Development in India, A. Satish Babu, A.P.H.Publishers Delhi.
7. Tourism & development Principles & Practices: O.P Kandari & Ashash Chandra.
8. Tourism Potentials in India. Mukesh Ranga.
9. www.chhatisgarh tourism. net/about/pm- message. htm.

RRIJM 2015, All Rights Reserved